VOL. 3
SPECIAL ISSUE 1
MARCH 2017

ISSN: 2454-5503
Impact factor : 3.012 (IIJIF)

CHRONICLE

OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A BIMONTHLY REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL

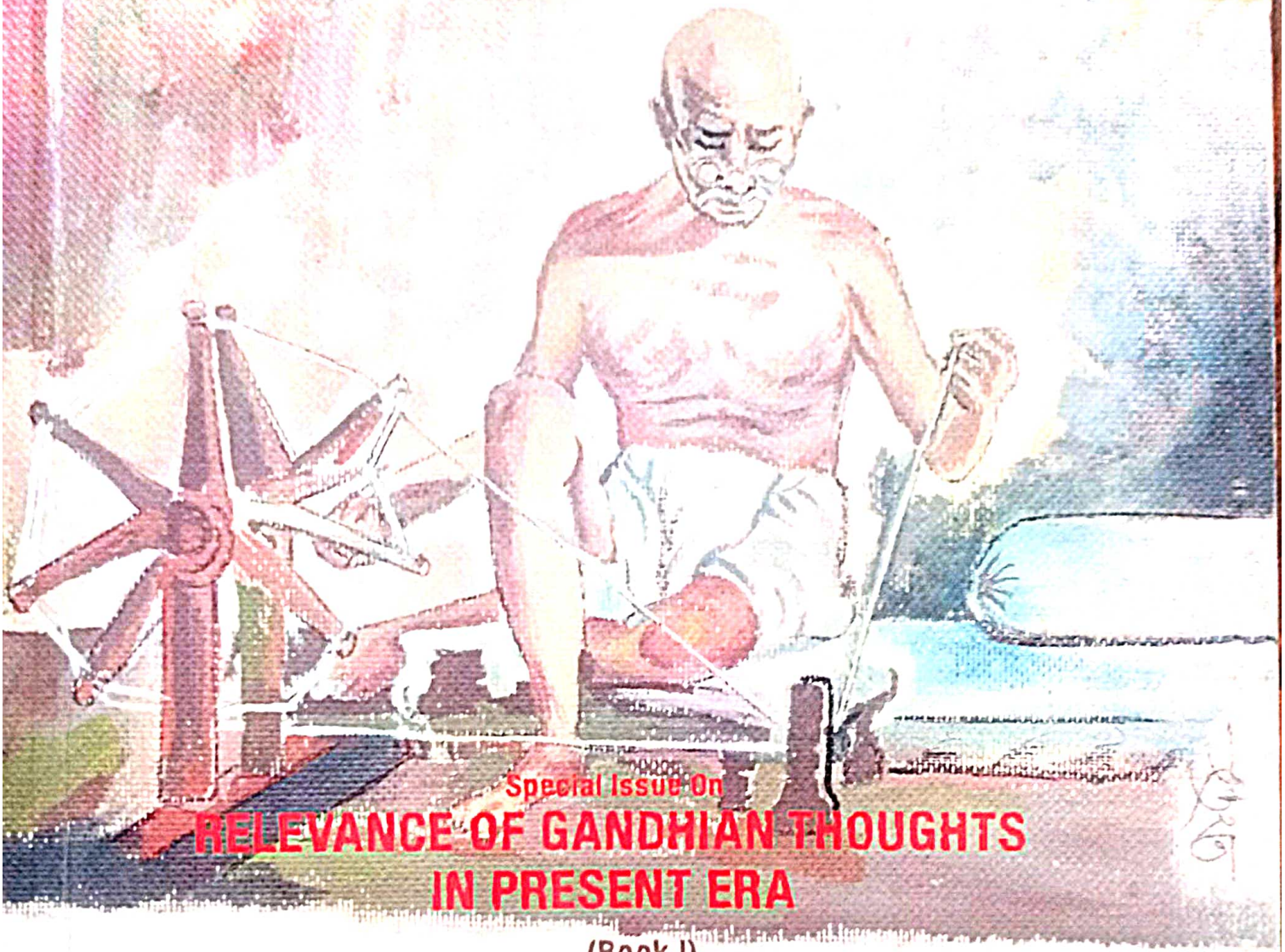

Special Issue On

RELEVANCE OF GANDHIAN THOUGHTS IN PRESENT ERA

(Book I)

2016-2017

Chief Editor
Dr. Shailaja Barure

Co Editor
Mr. Dhanaji Arya

BY

GANDHIAN STUDIES CENTRE,
SHRI YOGESHWARI EDUCATION SOCIETY'S
SWAMI RAMANAND TEERTH MAHAVIDYALAYA,
AMBAJOGAI, DIST. BEED - 431517

SHRI YOGESHWARI EDUCATION SOCIETY'S
SWAMI RAMANAND TEERTH MAHAVIDYALAYA, AMBAJOGAI
(NAAC REACCRIDITED 'B' GRADE)

ONE DAY INTERDICIPLINARY
NATIONAL SEMINAR ON

RELEVANCE OF GANDHIAN THOUGHTS IN PRESENT ERA

(24 MARCH 2017)

PART-I

CHIEF ORGANIZER
Dr. Pravin Bhosle
I/c Principal,
Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya
Ambajogai Dist. Beed

CHIEF EDITOR
Dr. Shailaja Barure
Director, Gandhian Studies Centre,
Dept. of Political Science,
Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya

CO EDITOR
Mr. Dhanaji Arya
Head Dept. of English
Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya

ORGANIZED BY
GANDHIAN STUDIES CENTRE,
SWAMI RAMANAND TEERTH MAHAVIDYALAYA,
AMBAJOGAI, DIST. BEED 431517

SPONSORD BY
UNIVERSITY GRANTS COMMISSION,
NEW DELHI

२४. महात्मा गांधी यांचे शैक्षणिक विचार / गादेकर पी.सी. / १२२
२५. महात्मा गांधी एक थोर समाज सुधारक : एक समाजशास्त्रीय आढावा / डॉ. दशरथ जाधव / १२६
२६. महात्मा गांधी आणि अस्पृश्यता निवारण / प्रा.डॉ.राम प्र.ताटे / १३२
२७. खादी आर्थिक स्वावलंबनाचा मार्ग / केंद्रे मनिषा धनराज / १३७
२८. ग्रामीण विकासात म.गांधीचे योगदान / प्रा.डॉ. अशोक टिपरसे / १४०
२९. महात्मा गांधी आणि सत्याग्रह /जयपाल व्ही. घोगरे / १४३
३०. खादी- एक आर्थिक चक्र / सचिन गुंडीराम डेंगळे / १४८
३१. महात्मा गांधीची रचनात्मक कार्यक्रमाची संकल्पना / राजेंद्र हिरामण सूर्यवंशी / १५२
३२. महात्मा गांधीजींचे सामाजिक विचार / प्रा. सुनीता तु. चव्हाण / १५७
३३. महात्मा गांधीजीची ग्रामस्वराज्याची संकल्पना / प्रा. डॉ. आर. डी. शिंदे / पापा शिवाजीराव देशमुख / १६१
३४. महात्मा गांधीजींचे तत्वज्ञान / डॉ.सुचिता निवृत्तीराव किडीले / १६५
३५. महात्मा गांधीजी - अध्यात्मिक व वैज्ञानिक विचार / ॲड. प्रा. गीता सा. गिरवलकर(शर्मा) / १६९
३६. गांधीजी चे शैक्षणिक विचार / हेमराज वामनराव जाधव / १७३
३७. महात्मा गांधी आणि भारतीय स्त्री / प्रा.कातळे संगिता गुलाबराव / १७६
३८. महात्मा गांधीजींच्या विचारातील आर्थिक दृष्टीकोण / डॉ. पलमंटे माधव पांडूरंगराव / १८१
३९. महात्मा गांधी आणि ग्रामीण विकास / प्रा.फाजगे अंगद केशवराव / १८५
४०. म. गांधीजी आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर / प्रा. कांबळे शिवाजी ई. / १८९
४१. छायावादी काव्य पर गांधी जी का प्रभाव / डॉ.वडचकर एस.ए / १९६
४२. महात्मा गांधीजींच्या अर्थकारणाचा शाश्वत विचार आणि वर्तमान / सागर शरद कुलकर्णी / २०१
४३. महात्मा गांधी आणि स्त्रीयांची शक्ती / अनुराधा ल.पाटील / २०७
४४. महात्मा गांधींची धर्मनिरपेक्षता / प्रा.ए.एस.फटांगरे / २१२
४५. महात्मा गांधीजींची ग्राम स्वराज्याची संकल्पा / प्रा.सुधाकर एस.हांगे / २१५
४६. महात्मा गांधी आणि ग्रामस्वराज्य/ प्रा.डॉ.विनोद विठ्ठल जाधव / २१९
४७. महात्मा गांधी व शेतकरी चळवळ/प्रा. डॉ. संजय खाडप / २२१
४८. महात्मा गांधीच्या आर्थिक विचारांची प्रासंगीकता / मेघा शरदचंद्र पाठक / २२
४९. महात्मा गांधी यांचे आर्थिक विचार / प्रा.डॉ.अंबादास पांडुरंग बर्वे / २२६
५०. महात्मा गांधी आणि ग्रामविकास / डॉ. स्मिता का. मरवाळीकर / २३२

College, Sonpeth • Late Ramesh Warpudkar (ACS) Dist. Parbhani

४१.

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College Sonpeth Dist. Parbhani

छायावादी काव्य पर गांधी जी का प्रभाव

डॉ.वडचकर एस.ए
कै.रमेश वरपुडकर महाविदयालय सोनपेठ जि.परभणी
भ्रमणध्वनी ८९८३८४८७८८

महात्मा गांधी अपने व्यक्तित्व और चिंतन से बीस वी शताब्दीको गहरे प्रभावित थे । २१ वी शताब्दी में भी उनका चिंतन उतनाही महत्वपूर्ण माना जाता है। यद्यपि उन्होने कोई सुनियोजित और सुव्यवस्थित दर्शन प्रस्तुत नही किया किंतु समसामाजिक विषयो पर लेखन किया है।धर्म,नीति,समाज,शिक्षा,राजनिती ,अर्थ स्वास्थ जैसे विविध पक्षों पर विचार किया है। गांधीजीने व्यक्तिगत और धार्मिक संदर्भ मे ब्रम्हाचर्य,अहिंसा,निर्भीकता,साहस संयत जीवन ,प्रार्थना और राम नाम के प्रचार पर ध्यान दिया है। दुसरी और समाज की उन्नती के लिए अछुतोदधार जनसेवा,चरित्रबल,विश्वप्रेम,नारी अधिकार,पारिवारीक जीवन तथा अनुशासन जैसी बातों पर ध्यान दिया है। सत्य,अहिंसा,और प्रेम को अपने समस्त जीवन दर्शन का केंद्र बनाया । गांधीजी का व्यक्तित्व बहुआयामी था,जो निरंतर अपने जीवन मे विविध प्रकार के प्रयोग करता रहा । उनके प्रयोगोंका आधार सत्य ही था । उनका व्यक्तित्व परिवर्तनशील था । वे अजीवन अपने ही विचारों की विसंगति से संघर्ष करते रहे। वे कही पर भी स्थितीवादी नही थे। वे धार्मिक थे पर धर्मांध नही । वे अहिंसावादी थे परंतु डरपोक नही । निर्भयता उनके व्यक्तित्व की सबसे बडी पहचान थी। गांधीजी ताजी हवा उस प्रबल प्रवाह कि तरह थे,जो अपने पास आनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को एक नई शक्ति दे देता है। उनके शांत लेकिन आश्चर्यजनक ढंगसे मजबुत और गतिशीलता के पुंज निराले व्यक्तित्व ने सारे देश में एक मनोवैज्ञानिक तब्दीली लाने का कार्य किया। उनके कार्यो में एक सजीव पुर्णता और एक नैतिक ईमानदारी थी, इसी कारण भारतीय जनता उनसे मोहित थी। कविवर सुमित्रानन्दन पन्त कहते है चल पडे जिधर दो डग मग मे, चल पडे कोटी पग उस और।

छायावादी काव्य की एक सुदृढ वैचारिक पृष्ठभूमि है,जो भारत के अतीत गौरव के प्रति सचेष्ट छायावादी कवि व्यक्ति की स्वाधिनता के साथ-साथ हर प्रकार की दासता के विरुध्द आवाज उठाते है। इसमे राष्टीयता और गांधीवादी जीवन मुल्य मुखरित होता है । अंग्रजो ने इस देश को गुलाम बनाकर यहाका अधिक शोषण प्रारम्भ किया इसलिए जनता का आक्रोश फुट पडा और महात्मा गांधी के नेतृत्व मे आजादी की लढाई एक नए रुप मे लड गई । इस युध्द के हथियार थे सत्य,अहिंसा,प्रेम,सत्याग्रह,नैतिकता,असहयोग एवं कष्ट । इन्ही हथियारों के बलबुते पर देश की जनता के मन मे त्याग और बलिदान की

भावना उत्पन्न होने लगी और छायावादी कवियोंने समानान्तर चलनेवाली राष्टीय सांस्कृतिक,जीवन मूल्यों को अपने काव्य का विषय बनाया था।

छायावाद युग में स्थूल से सूक्ष्म की ओर बढने की प्रकृती के अनुरुप गांधीवाद को भी स्थूल निरुपण के स्थान पर सूक्ष्म व्यंजना प्राप्त हुई। इसमें संदेह नही की गांधी की मानवतावादी विचारधारा ने छायावाद को अत्याधिक प्रभावित किया।प्रसाद की कामायनी पर गांधीवादी व्यक्तीवाद का प्रभाव अत्यंत सुस्पष्ट है। द्विवेदी युग युग से प्रबुध्दभारती में भारत महिमा का विशद वर्णन है। छायावाद का जीवन दर्शन आशावादी एवं संसार में प्रवृत्त करनेवाला है । कामायनी में जीवन दर्शन उल्लेखनीय रहा । इसमें वर्तमान युगकी हृदय और बुध्दी की सन्तुलीत समन्वय पर भी बल देते है ।

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College Sonpeth Dist. Parbhani

ज्ञान दुर कुछ भिन्न है,
इच्छा क्यो पुरी हो मन की
एक दुसरे से न मिल सके ।
यह विडम्बना है जीवन की ।

गांधीजी दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह के बाद जब वापिस लौटे उस वक्त पंडित माखनलाल चतुर्वेदी ने नि:शस्त्र सेनानी शीर्षक से गांधीजी पर कविता लिखी थी ।इसके बाद तो गांधीजी स्वाधिनता आंदोलन के महानायक बन गए कवियों ने उनके जीवन और आदर्श के बखान को अपना मुख्य विषय बना लिया ।रामनरेश त्रिपाठी ने पथिक खंडकाव्य में गांधी दर्शन के मुल्यों का खुलासा किया ।अपो साकेत में क्रमश: कृष्ण और राम की गाथाओं बन गांधी दृष्टी से पुर्निनमाण किया ।भारत-भारती में गुप्तजी ने काव्यात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है ।यही यह स्पष्ट होता है की व्दिवेदी युगीन कवियोंने पौराणिक प्रति की के व्दारा असहयोग आंदोलन की व्यंजनार्थ रुप में प्रस्तुत किया है ।

छायावादी कवियों मे प्रसाद,पन्त निराला, और,महादेवी वर्मा कल्पनाविहारी कवियों का काव्य संसार भी गांधीजी की व्यापक संवेदना से ओत प्रोत है। प्रसादजी ने मानवतावादी में गांधीजी की व्यापक प्रतिष्ठा को देखा है । महादेवी की करुणा, निराला की दया और पंतजी की सर्वभूतहित कामना की जडों में गांधी चिंतन का युगीन प्रभाव साफ-साफ नजर आता है । निराला ने अपनी दिल्ली नामक कविता में भारत के अतीतका गौरव एवं वर्तमान दुर्दशा का चित्रण किया है ।

क्या यह वही देश है
भीमार्जुन आदि का किर्ती क्षेत्र
चिरकुमार भीष्म की पताका ब्रम्हाचर्य दीप्त

उड़ती है आज भी जहा के वायु मण्डल में
उज्वल अधीर और चिरनवीन ।

पंतजी ने बापु प्रति कविता में गांधी के सत्य, अहिंसा एवं प्रेम के सिध्दांत को अभिव्यक्त किया है ।

सुख भोग खोजने आते सब
आए तुम करने सत्य खोज ।
जग की मिठठी के पुतले जन
तुम आत्मा के मनके मनोज ।

निराला की रचनाओं में आक्रोश एवं विद्रोह की प्रधानता मानव की पोड़ो परतन्त्रता के प्रति तीव्र आक्रोश अन्याय एवं असमानता के प्रती विद्रोह की भावना विदयमान है।उनकी प्रमुख रचनाएं -अनामिका,परिमल,अपरा,गितोका,बेला नए पत्ते आदि में परिस्थियों के घात -प्रति घात ने उन्हे सचेत एवं जारुक कवि बना दिया है । वे अन्यार,अत्याचार के विरुध्द जीवनभर संघर्ष करते रहे । सामाजिक विषमता स्वर के विरुध्द प्रभावी आवाज उठाते रहे। उनके काव्य का स्वर क्रांतिकारी एवं विद्रोही भावनाओं से युक्त है । उनकी भिक्षुक वह तोडती पत्थर गरीबो के प्रति सहानुभुति से भरी हुई है । निराला ने मजदुरनो की दीन दृष्टी को अभिव्यक्तीती दी है ।

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन को और देखा छिन्न तार
देख कर कोई नहीं
देखा मुझे उस दृष्टि से जो मार खारोई नही
सजा सहज सितारा ।

निरालाजी ओज और औदात्य के कवि है। जिन्होंने भारत को परतन्त्रता के प्रति जनता को जागरुक करना अपना परम कर्तव्य मानकर जागो फिर एक बार कविता में भातीय वीरो को अंग्रज रुपी गोदडो का सफाया कर देने का आव्हान किया है ।

शेरों की मांद में आया है आर्जस्यर
जागो फिर एक बार
तुम हो महान तुम सदा ही महान
है नश्वर यह दीनभाव
पदरज भर भी है नही पुरा विश्वभार
जागो फिर एक बार ।

निराला के काव्य मे युग-युग से प्रताड़ित प्रवंचित एवं पीड़ीत दलितों के प्रति करुणा है । भारतीय समाज में विधवा की स्थिती कितनी दयनीय है,इस को उन्होने अपनी विधवा कविता में चित्रित किया है ।

वह इष्टदेव के मन्दीर की पुजासी
वही दीप शिखा-सी शान्त भाव मे लीन
वह कूर काल ताण्डव की स्मृती रेखा-सी
वह टूटे तरु की छुटी लता -सी हीन

दलित भारत की ही विधवा है ।

निराला भले ही क्रान्तिदुत रहे हों पर उनकी रचनाओं में भी गांधी दर्शन के प्रति आदरभाव व्यक्त हुआ है । गांधी की जीवनदृष्टी में कला और उससे जुड़े प्रश्नों का अपना महत्वपुर्ण स्थान था । गाधी ने साहित्य के उद्देश को स्पष्ट करते हुए कहते थे किसा न या जो मेहनती आम आदमी का नुमाइन्दा था, जिसकी कोख मे भाषा,शास्त्रों के बनावटी पने से दुर अनुभव को व्यक्त करने के लिए, नैसर्गिक रुप से अपना स्वरुप ग्रहण करती है कि हि शब्दो का सहारा लेकर कहें तो

किसानो सम्वेदना को समझने और आभ्यंतरीकृत करने तथा तत्पश्चात उसे साहित्यिक एवं कलात्मक स्वरुप में अभिव्यक्त करने पर उन्होंने जोर दिया छायावाद का नवीन सांस्कृतिक दृष्टीकोन गांधीवाद का ही सास्कृतिक दृष्टीकोन था । छायावादी धारा के अन्य कवियो में भठाव तौचरण वर्मा, उदयशंकर भटट,केदारनाथ मिश्र प्रभात और हरिकृष्ण प्रमी ने गांधीवाद को आधर बनाकर कविताएँ लिखी । छायावादी कवियों ने गांधीजी के समान काव्य के क्षेत्र में व्यक्ति स्वातंत्र्य की महिमा गाई । गांधीजी मानते थे की व्यक्तो के आवेगों और संकल्पों व्दारा सामाजिक-राजनितीक लाया जा सकता है । गाधीजी एक ऐसे युगपुरुष थे जिन्होंने अपने विचारों से समग्र युग चेतना को प्रभावित किया। तत्कालीन समाज,राजनीती,साहित्य पर गांधीवाद का प्रभाव पड़ा है। मानवतावाद,विश्वबन्धुत्व,लोककल्याण के जो स्वर छायावादी काव्य में दिखाई पडते है, उन्हे गांधी का ही प्रभाव समझा उचित है । यही हम जीवन मे व्याप्त विषमता को दुर कर समरसता को अपना ले तो संसार का स्वरुप ही बदल जाएगा । वहाँ एक ऐसे विश्व का दर्शन होगा, जहा कोई शापित नही, कोई तापित नही होगा । गांधीजी सिर्फ छायावाद में ही सीमीत हे ऐसी बात नही आज भी समकालीन समाज में भी वे समीचिन है । गांधी का जीवन दर्शन भारतीय जनमानस के साथ -साथ कवि की चेतना में भी गहरे समस्या हुआ है और इसीलिए गांधीवाद के प्रति किसी भी प्रकार का राजनैतिक दुर्व्यवहार उसे क्षोभसे भर देता है ।

१.समाज को अधिकमहत्व
२.पूँजीवाद का विरोध
३.सहयोग की स्थापना
४.समानता का समर्थन
५.अधिकतम आर्थिक विकास
६.श्रमिक वर्ग के हितों का विशेषध्यान
७.स्वच्छता ८.समाजकल्याण
९.मानवीय आवश्यकताओं का समाधान करना
१०.व्यक्तित्व में प्रजातांञिक मुल्यों विकास करना

उपरोक्त विचारों को लेकार गांधीजी मानते थे की सामाजिक क्रान्ती से पूर्व वैचारिक क्रान्ति का होना अपरिहार्य है। इसी विषयों को लेकर छायावादी कवियों पर स्पष्ट प्रभाव नजर आता है। गांधी जी के मानवतावादी,समतावादी,श्रमिकहित,नारी समस्या अघुत्तोदार अंग्रेजो का विरोधृ विश्वबंधुत्व, लोककल्याण हर प्रकार का दासता को लेकर छायावादी कवियों ने अपनी कलम चलाई है।

संदर्भ सुची :-

१.गाँधी का सामाजिक चिन्तन-डॉ.एम.के.मिश्रा
२.छायावाद-डॉ.नामवरसिंह
३.साहित्यअमृत-पञिका
४.आलोचना-ञैमासिक पञिका २०१०
५.कामायनी -जयशंकर प्रसाद

❑❑❑

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

महात्मा गांधीजी सत्याग्रह व अहिंसा ही दोन महाअस्त्रे केवळ भारतालाच नव्हे तर जगाला ; गरीब, वंचित, पीडित जगाला दिलेली देणगी होय. या अस्त्रांच्या साह्याने केवळ भारतीय उपखंडातील देश स्वतंत्र झालेच, पण जगातील अनेक देशांना स्वातंत्र्य मिळवणे सुलभ झाले.

गांधीजींचे विचार वैश्विक स्वरूपाचे असून ते सार्वकालिक आहेत. हे विचार आचरणात आणायला कठीण असले तरी 'जेवढ्या प्रमाणात ते एखाद्या व्यक्तीला किंवा समाजाला ते आचरता येतील तेवढ्या प्रमाणात त्या समाजातील कलह, हिंसा, अत्याचार ई. दोषांपासून त्या समाजाची सुटका होऊ शकेल एवढे सामर्थ्य या विचारात आहे.

तत्वाविना राजकारण, श्रमा विना संपत्ती, नीतिविना व्यापार, चारित्र्याविना शिक्षण, सद्सद्विवेकबुद्धीविना विकास, त्यागाविना पूजा आणि मानवतेविना विज्ञान, हे त्याज्य मानून; श्रमाधारित, निसर्ग व पर्यावरणस्नेही, नीतिमान व सहिष्णु जीवनशैली सर्वांना सुखद होते याचा प्रात्यक्षिक वस्तुपाठ म.गांधींनी सर्व जगाला दिला. अध्यात्म, थोर तत्वज्ञान, केवळ चर्चेचे विषय नसून आचरणाचेहि विषय आहेत, हे नुसते सांगून न थांबता आयुष्य भर 'सत्याचे प्रयोग' करून जगासमोर ठेवले. त्यामुळे जग त्यांच्याकडे मार्गदर्शक, महात्मा म्हणून पहाते.

गांधीजींच्या सर्व मतांशी सहमत होणे जसे शक्य नाही तसेच ते आवश्यकहि नाही. पण जेवढे पटते आणि जेवढे आचरता येते, तेवढेच आपल्याला घेता आले तरी आपला वैयक्तिक, कौटुंबिक आणि सामाजिक उद्धार करण्याची शक्ती या विचारात आहे याची प्रचीती जगभरातील असंख्य लोकांनी घेतली आहे.

- डॉ. सुरेश खुरसाळे
अध्यक्ष
श्री योगेश्वरी शिक्षण संस्था, अंबाजोगाई

Published by:
Centre For Humanities and Cultural Studies,
A- 102, Sanghavi Regency, Sahyadrinagar, Kalyan (W).
Email: cheskalyan@gmail.com
Mob. +91 9730721393 +91 8329000732

ISSN: 2454-5503
IMPACT FACTOR: 4.197(IIJIF)
(UGC Approved
Journal No. 63716)

CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

VOL. 4 NO. 1 JAN. 2018
A BIMONTHLY REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL

SPECIAL ISSUE

On the Occasion of One Day National Conference On

WOMEN EMPOWERMENT CHALLENGES AND SOLUTIONS

27th January, 2018

(Book IV)

2017-2018

Editor
Mr. Eshwar L. Rathod

Principal
Dr. A. D. Mohekar

ORGANIZED BY
DEPARTMENT OF SOCIOLOGY
DNYAN PRASARAK MANDAL'S
SHIKSHAN MAHARSHI DNYANDEO MOHEKAR MAHAVIDYALAYA,
KALAMB. DIST. OSMANABAD

VOL. 4 | ISSUE 1 | JANUARY 2018 (UGC Approved Journal No. 63716) Impact Factor: 4.197 (IIJIF)

ISSN: 2454-5503

CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES (CHCS)

A BIMONTHLY REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL

(BOOK IV)

Special Issue on the Occasion of National Conference on

Women Empowerment: Challenges and Solutions

(27 January, 2018)

Organized by

Shikshan Maharshi Dnyandeo Mohekar Mahavidyalaya

Kalamb, Dist. Osmanabad

Mr. Eshwar L. Rathod
Editor

Dr. Ashokrao Mohekar
Principal

MGEW SOCIETY'S

CENTRE FOR HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

KALYAN (MAHARASHTRA)

Contact: +91 9730721393 +91 8329000732 chcskalyan@gmail.com

43. कौटुंबिक हिसाचार आणि स्त्रिया	प्रा. पी.वाय.गडकरी	
	प्रा. डॉ. प्रतिभा बी. अहिरे	
44. लिंग विषमता आणि स्त्रियांचे जीवन	प्रा.बळीराम वसंतराव पवार	11
45. साहित्य, समाज आणि स्त्रिया	कु. ज्योती शरद इंगळे	11
46. महिला सबलीकरण आणि शासन सहकार्य	प्रा. राजाराम रा. मिसे	1
47. कौटुंबिक हिंसाचार आणि स्त्रिया : सामाजिक विश्लेषण	डॉ. नानासाहेब जाधव	122
	रवि सोळुंके	
48. भारतीय समाजातील हुंडा पद्धतीचा स्त्रियांवर होणारा परिणाम	प्रा. पुंडगे भिमराव दळणराव	125
49. स्त्रीवादी अभ्यास विकास आणि स्त्रिया	प्रा. पाटील श्रीधर नरसिंगराव	127
50. भारतीय महिला आणि स्त्री मुक्ती चळवळ	प्रा.प्रशांत क्षीरसागर	129
51. भारतीय समाज व्यवस्था व स्त्रिया	प्रा. करुणा प्रपात इंगळे	130
52. भारतीय समाजव्यवस्था व स्त्रिया	प्रा. सीमा भीमराव ओटे	123
53. भारतीय महिला आणि हुंडा - प्रथा	शेख शहारुख फारुख	136
54. भारतीय संस्कृती परंपरा आणि स्त्रिया	डॉ. मेधा गोसावी	139
55. डॉ. शेला लोहिया यांच्या समाजवादी महिला विषयक भूमिका व कार्य	कान्होपात्रा सखाराम क्षीरसागर	141
56. महिला सबलीकरण : आव्हाने आणि उपाय	प्रा.शहादेव शिवाजी डोंगर	143
57. मरिआईवाला जमात आणि स्त्री.	प्रा.जयश्री डंके	145
58. लिंगभाव विषमता आणि स्त्रिया	प्रा.गडमे ए.एम.	147
59. महिला सक्षमीकरणात बचत गटांची भूमिका	प्रा. दिलीप कुमरे	149
60. लिंगभाव विषमता आणि स्त्रिया	प्रा. खंत्री एच.आर.	151
61. स्त्री–मुक्ती चळवळ	प्रा. शिवदास दगा पावरा	154
62. भारतिय स्त्रियांवरील कौटुंबिक हिंसाचार: कारणे आणि उपाय	स्वाती सुधाकर कुलकर्णी	157
63. हिंसाचार आणि स्त्रिया	श्रीमती. एस.एस.क्षिरसागर	159
64. हिंदूकोड बिल: महिला मुक्तीचा जाहिरनामा आणि डॉ बाबासाहेब	प्रा. बाळासाहेब नरवाडे	161
65. भारतीय स्त्रिया आणि कायदा	प्रा. ज्योती ज्ञानोबा मुंडे	163
66. लिंगभेद विषमता आणि स्त्री जीवन	प्रा.सतीश गंगाराम ससाणे	166
67. कौटुंबिक हिंसाचार आणि स्त्री	प्रा.डॉ.खलील नबीसाब सय्यद	168
68. महिला सबलीकरण आणि 21 व्या शतकातील आव्हाने	मोरे पंडित किशनराव	172
69. माडसांगवी गावातील महिलांच्या जमिनविषयक मालकीचा....	प्रा. डी. एच. शिंदे	173
70. पश्चिम विदर्भातील कोळी जातीच्या स्त्रियांचा ... सहभाग	प्रा.अनिल बि.वानखडे	175
71. साहित्य, समाज और नारी.	डॉ. वडचकर एस. ए.	179
72. साहित्य समाज तथा स्त्रियां	डॉ. ओमप्रकाश बन्सीलाल झवर	181
73. पेती अर्थव्यवस्थेतील स्त्रियांचे स्थान	डॉ. ज्योती षेशराव दिघाडे	184
74. दहेज प्रथा, समाज और महिला	प्रा.डॉ .काकडे अनिता भिमराव	186
75. लिंगभेद - महिला सशक्तीकरणात प्रसार माध्यमे	प्रा.मुंढे चांगदेव निवृत्ती	188
76. हुंडा प्रथा समाज आणि स्त्रीया	श्रीमती राठोड पारू बाबुराव	190
77. भारतीय समाजव्यवस्था आणि स्त्रिया	प्रा. दिपक भिला चौधरी	192
78. भारतीय समाजव्यवस्था, हुंडा प्रथा आणि स्त्री भ्रूणहत्या	शिंदे अर्चना भास्करराव	194
79. ग्रामीण समाज जीवनात स्त्रीचे आरोग्य : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास	प्रा. बडे नंदलल भिमराव	197
80. जागतिकीकरणात स्त्रिया	खंत्री कुंडलिक रघुनाथ	199
81. **हुंडा-प्रथा, समाज आणि स्रिया**	शीतल मारुती कोरडे	200
	प्रा. डॉ. अतुल.नारायन चौरे	202
82. शिक्षणातून स्त्री सबलीकरण	प्रा. सो. माधुरी गोविंद गिरी	204
83. लिंगभाव विषमता आणि स्त्री	प्रा.डॉ. बन वशिष्ठ गणपतराव	205
84. कौटुंबिक हिंसाचार आणि स्त्रिया	श्रीमती साळुंके इंदू चंद्रकांत	207

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

Chronicle of Humanities and Cultural Studies
(UGC Approved Journal No. 63716)
ISSN: 2454-
Impact Factor: 4.197

Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth, Dist. Parbhani

71.

साहित्य, समाज और नारी.

डॉ. वडचकर एस. ए.
हिन्दी विभाग, कै. र. व. म. सोनपेठ.

मानवी जीवन यापन करने की पध्दती उसकी मानसिकता पर निर्भर करती है, और यह मानसिकता मानव की परम्परागत है! मनव हजारों वर्षो से जिस मानसिकता का गुलाम है उसमें सबसे केंद्र में है पुरुष प्रधान संस्कृति! थ्जसकी वजह से स्त्री को दुय्यम दर्जा प्राप्त है! इनको वर्षो की परम्परा को स्त्रीन भी अपनी नियती मानकर स्वीकार कर लिया है! जब स्त्री को गुलामी और अधिकारों की जानकारी षिक्षित स्त्री को महसुस हुई तब साहित्य में स्त्री विमर्ष का आरम्भ हुआ! भारतीय परम्परा और सभ्यता विष्व में श्रेष्ठतम परम्परा के रूप में मानी जाती है! उसके साथ ही यह भी सत्य है! की हमारे यहाँ कई बार स्त्री को केवल भोग की वस्तू ही माना गया है! इसके उदाहरण भक्तिकालीन कुछ श्रेष्ठ संत कवियोंने स्त्री को कामिनी रूप से दूर रहने का संदेष दिया है! वर्तमान समय में परिस्थितियाँ बदल गयी है! वर्तमान समय में स्त्री के सामने स्त्री अस्मिता का प्रष्न सबसे बडा है! स्त्री – अस्मिता का प्रष्न भारतीय समाज में आधुनिक चेतना का प्रतीक है! आधुनिक स्त्री को जब अपनी भारतीय परंपरा में अपना चेहरा दिखाई नहीं देता है! तब वह अपनी परंपरा की तलाष करती हुई इतिहास में लौटती है। और अपने को स्थापित करना चाहती है! समाज में पुरूष प्रधान संस्कृति को यह समझना ही होगा कि स्त्री समानता की लडाई बुनियादी लडाई है! इससे उसे स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता एवं अस्मिता की पहचान मिलेगी! इस संघर्ष के प्रति, तदर्थभाव, दयाभाव या सहानुभूतिभाव, स्त्री के संघर्ष एवं अवदान को कम करेगा! स्त्री को समानता के संघर्ष के प्रति दया या सहानुभूति की जरूरत नहीं है! बल्कि यह महसूस करने की जरूरत है की यह तो उसका अधिकार था जो उसे दिया जाना चाहिथा!

सदियों से समाज में चली आरही परम्पराओ और रूढिवादी मानसिकता के कारण स्त्री चाहे जिस भी वर्ग, जाति, समूह की रही हो वह जन्मसे ही आपने आपको असहाय और अबला समझकर सदैव पुरुषवादी मानसिकता का षिकार होती रही है! आज समाज में तमाम तरह के बंधनों से जकडी महिलाएं स्वयं की मुक्ति और अपनी अस्मिता केलिए देष के हर कोनेसे आवाज उठा रही है! स्त्री की स्थिति भी युगों से ऐसी ही चली आ रही है! उसके चारों और संस्कारों का ऐसा क्रूर पहरा रहा है! की उसके अंतरमन जीवन की भावनाओं का परीचय पाना ही कठिन हो जाता है! वह किस सीमा तक मानवी है और उस स्थिति में उसके क्या अधिकार रह सकते है! यह भी वह तब सोचती है जब उसका हृदय बहुत अधिक आहत हो चुकता है! स्त्री षोषण के विरुध्द सामाजिक और राजनैतिक आंदोलनों की षुरूआत हुई, जिसके माध्यमसे से स्त्री से जुडे हर तरह के षोषण के विरुध्द राजाराम मोहन राय, दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, महात्मा ज्योतिबा फूले और सावित्रीबाई फूले आदि विभिन्न महान हस्तीयोने महिलाओं के तमाम तरह की सामाजिक रूढियों, बन्धनों से मुक्त करा कर उन्हे उनका हक दिलाया किन्तु आज भी उनकी समस्याएँ हल नही हो सकी है! पुरुष प्रधान संस्कृतिमें पुरुष की मानसिकता को बदलना बहुत कठीन कार्य है! तो भी आधुनिक स्त्रीने जिस तरहसे अपने आपको बदलकर सिध्द कर दिया है! तो जरूरत है अब पुरुष और स्त्री दोनों की मानसिकता में परीवर्तन लाने की! ठस संबंध में प्रसिध्द विचारक डॉ. सुर्यनारायण रणसुभेजी का मत है की प्रष्न केवल स्त्री की मानसिकता को बदलने का नही, पुरुष की मानसिकता में भी मूलभुत परिवर्तन की जरूरत है! क्योंकि हजारों वर्षो से उसे यह चेताया गया है की स्त्री या तो श्रध्दा की अधिकारणी है (माँ या बहन नारी तुम केवल श्रध्दा हो) अथवा भोग की पत्नी या वेष्या! वर्तमान युग में एक और स्त्रीया अपने कर्तव्य तथा क्षमता का परीचय दुनिया भरमें दे रही है! तो दुसरी और एक वर्ग आज भी स्त्रीकों केवल भोग की वस्तू , मषिन की रूप में ही स्वीकार करने की मानसिकता का गुलाम है! स्त्री की सुरक्षा उसकी इज्जत समझकर

उसके हजारो बंधनों में बंधता रहता है! जातीधर्म की संस्कारों की प्रकृतियों के कारण पुरुषोंने उसे अपनी आन, बान, और षान बना लिया है! स्त्री समंस्या समाज की वह जिवन्त समस्या है, जो परीवार,

ISSN: 2454-5503
Impact Factor: 4.197 (IIJIF)

Lale Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

परोक्ष ग्राम – नगर सर्वत्र उपस्थित है! यह ऐसा ज्वलंत प्रश्न है! की जो प्रत्येक विचारषिल व्यक्ती को चिंतन करणे केलिए विवष करता है! नारी सृष्टी की सुंदरत्म वस्तू है! उसका रूप ही श्रेष्ठता को सिध्द करता है! उसका आत्मगौरव अखंड सेवा और त्याग वृत्ती और भी महिमामयी बताने है! उसकी मोहक छवि ने पुरूष वृत्ती को सदैव लुभाया है और उसकी सेवा त्याग वृत्तीने अभिभूत किया है भारतीय वाङमय ने नारी महिमा का गान हुआ ही है भौतिकवादी सभ्यता का साहित्यकार भी उसके संग को प्रिय मानता है गेट का कथन है Socicty of Womens is Foundaction of good Manners तो लावेल की चिन्तनधारा गेटे से भी बढकर आगे चलती है! Earth`s Noblest thing is a women perfact नारी मुक्ती की भावना सार्वभौमिक ही नहीं सार्वकालिक होती है! नारी मुक्ति अब एक विष्व प्रचलित पारिभाषिक षब्द बन गया है! जिसे इंग्रजी में वुमेन लिबरषन वीमंस इमेंसिपेषन या वुमन मूवमेंट जैसे नामोसे पहचाना जाने लगा है नारी वाद या फेमिनिज्म भी इसके पर्याय मान जाते है नारी मुक्ति, से अभिप्राय नारी की जिवन दषाओं में उस हाद तक सुधार लाना है, जहॉ तक की किसी देष के पुरूषों की जिवन दषा में सुधार से आषय नारी की दिर्घायु, उसकी स्वास्थ रक्षा, षिक्षा, रोजगार तथा राजनैतिक अधिकारों तथा आर्थिक सुख व स्वालंबन का पुर्ण संरक्षण है जिससे उसकी अस्मिता बन सके, पुरूष पर उसकी निर्भरता समाप्त हो और किसी भी रूप में दर्जा दोयमना रहे!

हिन्दी साहित्य में स्वातंन्त्र्योत्तर युग में नारी जिवन की भूमिका एवं उसकी समस्यांको लेकर हिन्दी उपन्यासकारों और कहानिकारों ने तेजी के साथ काम किया है और आज भी स्त्रीविमर्ष चला आ रहा है! वर्तमान समय में सामाजिक परीवेष में नारी की स्थिती, नारी पुरूष के पारस्पारिक समवन्व, नारी के प्रति पुरूष का संकुचित दृष्टि कोण एवम् पुरूष के साथ आधुनिक नारी की सहायता का वास्तव चित्रण इन कृतियों में झलकता है! उषाप्रियवंदा इस दौर की महिला लेखिका है जिस वक्त प्रेमचंदजी बहुत पिछे छुट गये थे, और यषपाल, जिनेंद्र तथा अज्ञेयजी का कहानी का मुहावरा भी रचना के केंद्र में नही रह गया था, जिसमें मोहन राकेष, कमलेष्वर, राजेंद्र यादव तथा नर्मल वर्मा न केवल परपरागत कहानी के कलेवर को व्यापकता में छोडते है, अपितू समकालिन परीवेष की विद्रपता से विक्षुब्ध होकर व्यवस्था के बदलाव की जन आकांक्षायों को नई भगिमा के साथ व्यक्त करते है! यहा मोह भंग इतना व्यापक है की संपूर्ण व्यवस्था के प्रति विद्रोह की मानसिकता दिखाई देती है! इस व्यवस्था विरोध्द का राजनैतिक पहलू, सरकार और प्रषासन तंत्र जुडा है तो सामाजिक पहलू नारी मुक्ति की कथा कहता है नारी मुक्ति की आकांक्षा इस आकांक्षा हेतू उपजा सघर्ष एव मुक्ति सार्थक तलाष कहानी साहित्य के साथ उपन्यास साहित्य में भी अभिव्यक्त हुई है उषाप्रियवंदा, मनुभंडारी, कृष्णासोबती, मालती जोषी, राजीषेट तथा मृदुलागर्ग आदि लेखिकाए इसी दौर की प्रतिनिधित्व करती है! तदनंतर महिला लेखिकाओंने औपन्यासिक कृतियों में नारी जुडे विभिन्न मुदकों उपन्यासके कथ्य के केंद्र बिंदु के रूप में प्रकट करते हुए, नारी मुक्ति के विभिन्न पक्षों का उदघाटन किया है आज का स्त्रीलेखन विकसित एवं परीष्कृत होता जा रहा है! आज की स्त्री का दायरा सिमित नही विस्तृत है! वह हर क्षेत्रमें मौजुद है इसी कारण वस नये – नये विषय नये – नये वाद उनकी रचनाओं आते है, नर नारी की मानसिकता को लेकर डॉ. प्रतिभा पाठक ने लिखा है! नर और नारी की मानसिक भिन्नता का अनेंक प्रकारसे विषलेषण करने पर पता चलता है की, नारी की मानसिकता उसकी षारिरीक संरचना विषेष कारणही नर से भिन्न है सामाजिक परिवेष, पारिवारीक तथा व्यक्तिगत परिस्थितियॉ, संस्कार और मूल्य, सब मिलाकर नारी मानसिकता की निर्मिती करती है जन्मसे लेकर वारथा तक नर–नारी की मानसिकता में कोई अंतर नहीं होता है! समाज में इसी मानसिकता के परिवर्तन की प्रकिया का साहित्य पर गहरा प्रभाव दिखाई देता है! साहित्य के माध्यमसे स्त्री के स्वत्व की पहचान करने का प्रयास किया! हिंदी कथा साहित्य के अंतर्गत महिला लेखिकाओं ने नारी – पुरूष सम्वन्धों के अलावा अनेक सामाजिक आर्थिक राजनीतिक, तथा विविध संदर्भो की कहानियॉ भी लिखी है! आज के कथा साहित्य में स्त्री लेखन के विविध आयाम दिखाई देते है, आज की स्त्री परक रचनाएँ समाज की चिंता करनेवाली रचना है! आज की महिलाओं में अदम्य षक्ति, बुध्दिमता और कार्यक्षमता तथा सामर्थ्य को पनपता देख जग हैरान है! महिलाएँ अपने जीवन की अस्तित्व की लडाई केलिए एक चुनौती के रूप में उसे स्वीकार का रही है! ऐसे समय में नारियों में जो बल आ गया है! वह एक निष्ठता, धैर्य, कामना, लगन का नतीजा है! फिर भी समाज में जगह जगह उसके साथ गलत खिलवाड होता नजर आता है! ऐसे समय में आधुनिक नारी संक्रमण की स्थिति से गुजर रही है! आधुनिक नारियों में आए सुधारों को षालीनता, नैतिकता के नाम पर उसकी

आवाज दबाई जा रही है! आज की महिलायों में प्रेम व स्नेह करनेवाली महिला सबको स्वीकार्य है. लेकिन महत्वकांक्षाओं की पूर्ति की दिषा में षिखरों को छुनेवाली संघर्षरत महिला उनकी दृष्टि में हेरा है! फिर भी राष्ट्र में रहनेवाली महिलाओं की उन्नति पर ही समाज व राष्ट्र की उन्नति निर्भर होती है।

आज हर जगह पर बडे जोर – षोर से स्त्री – विमर्ष पर बातचीत हो रही है और स्त्रियों के अधिकारों को लेकर गंभीर रूप में चर्चा होती है इतनाही नही अनेक कवियों, लेखकों और समाजसुधारकोंने स्त्री विमर्ष को लेकर अनेक पुस्तकों का लेखन भी किया है, जिनसे स्त्री षक्ति को बढ़ावा तो दिया गया, साथ ही सदियों से स्त्रीयों ने सही प्रताडनाओं, तकलिफों, अन्यायों, अत्याचारों को दर्षाकर हमारे समाज की असामाजिकता, गलत परम्पराओं, रूढियों, पुरूषवादी मानसिकता का पर्दाफाष किया है! इन सारे पहलकारियोंका स्त्रीयों को लेकर जो कार्य हुआ है! वह बधाई के पात्र है लेकिन इनका कार्य आज के समयमें किस दिषा और दषा में चल रहा है? इस बारे में कुछ नही कहा जा सकता।

संदर्भ ग्रंथ सुची

1) जगदीष्वर चतुर्वेदी – स्त्रीवादी साहित्य विमर्ष.
2) वर्मा – षृखला की कडियां.
3) डॉ. सुर्यनारायण रणसुभे – आधुनिक हिन्दीसाहित्य का इतिहास.
4) सामाजिक संस्था – दा. धो. काचोळे.
5) सामाजिक संस्था – दा. धो. काचोळे.
6) डॉ. प्रतिभा पाठक – समकालीन हिन्दी उपन्यासकी आधुनिकता.

❑❑❑

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani